मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

यह तो सर्वविदित है कि विकास का दूसरा नाम परिवर्तन है । अगर दुनिया आगे बढ़ती है तो उसे अपने कुछ पुराने मान्यताओं को भी बदलने पड़ते हैं । परंतु यहाँ तो सब लोग इसी ताक में रहते हैं कि समाज में नारी की स्थिति हमेशा एक जैसा ही रहे...!! भला ऐसा क्यों?? बड़े अचंभे की बात है कि एक तरफ तो तुम समाज की प्रगति का ढिंडोरा पीटते फिरते हो, और वही दूसरी तरफ समाज के आधे हिस्से को पेरों तले दबाकर रखने की कोशिश करते हो...नारी का शिक्षित होना समाज को पसंद है किंतु उनका घर से निकल उसे खलता है । क्या ऐसी दोहरी मानसिकता लेकर समाज आगे बढ़ पाएगा ? अगर घर से बाहर निकालना ही नहीं था, तो फिर इतनी महनेत कर पढ़ाई करने का अर्थ ? स्त्री के लिए आजादी शब्द की परिभाषा भी समाज ही चुनकर देती हैं, जिसमें उसे पारिभाषिक आजादी तो मिल जाती है; परंतु उसे कार्य में परिणत नहीं कर पाती हैं । अगर गलती से भी यह आजादी उसने उठा ली तो समाज उसके लिए तरह तरह के बातें बनायेंगे और उसका मखौल उड़ाते है । केवल यही नहीं साहित्य में भी नारी की यही छवि उभरती रही ...और यह स्वाभाविक भी तो है । आखिरकार साहित्य समाज का ही तो दर्पण है ! मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में, "बेशक ऐसे ही संदेहों के घेरे में साहित्य भी उसे बांधता रहा है कि बहुत पुराने और पवित्र शब्दों के अर्थ न पलट जाएं । विवाह संस्था की एकांगिता बनी रहे, यह चिंता बराबर रहती है । इसी सावधानी के कारण पारिवारिक ढांचा मजबूती के साथ किलों और गढ़ों का काम करता है । इन किलों और गढ़ों में स्त्री को कैद करके कहा गया कि-सुरक्षित स्त्री, सती और देवी रूपी स्त्री !" [1] शोध-प्रबंध के दोनों कथाकार क्रमशः मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी ने भी ऐसे ही अपनी आजादी को चुना था और जीवन में उसका प्रयोग किया ताकि उनके इस कदम से दूसरों को प्रेरणा मिलें । बदले में जैसा की होता आया है; उन्हें लोगों की बातें सुननी पड़ी । पर वे नहीं रुकीं और साहित्य साधना में बरती रही । जब स्त्री ने लिखना शुरू किया तब ऐसी ऐसी बातें सामने आयी जिससे तथाकथित सभ्य समाज की असभ्यतायें खुलकर बाहर आने लगी । ऐसे में उन साहित्यकारों पर शिकायतें उठना तो अत्यंत लाज़मी हैं । बहरहाल धीरे

धीरे स्थिति ऐसी बनी कि स्त्री खुलकर लिखने लगी और ज्यादा ज्यादा स्त्री उनके साथ जुड़ती गई । प्रथम अध्याय में नारी-संवेदना की पृष्टभूमि पर प्रकाश डाला गया है । उसके बाद इस अध्याय में दो संघर्षशील कथाकार क्रमशः मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा की जाएगी । साथ ही अंत में दोनों कथाकारों के जीवन व साहित्य पर एक तुलनात्मक समीक्षा भी प्रस्तुत की जाएगी ।

2.1. मैत्रेयी पुष्पा:

अपने सशक्त लेखनी से हिन्दी साहित्य के गद्य विधा को चमकृत करनेवालों में से मेत्रेयी पुष्पा का नाम भी उल्लेखनीय रहा है । 19वी सदी के अंतिम चरण से आपने लिखना शुरू किया था । उनके उपन्यासों की ख़ासियत उनकी नायिकाएँ हैं; जो वर्षों से चली आयी परंपरा को तोड़ती हुई जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रयत्न करती हैं । हिन्दी साहित्य के बड़े बड़े विद्वानों ने भी उनकी लेखनी की सराहना की हैं । कुछ आलोचकों ने उनकी भारी समालोचना भी की हैं, क्योंकि उन्होंने रूढ़ि-स्वरूप परम्पराओं को विरोध किया तथा तथाकथित स्त्री-विरोधी मान्यताओं का नकारते हुये स्त्री को समाज में प्रतिष्ठित करने का भरसक प्रयत्न किया है । मैत्रेयी पुष्पा ने किसी की परवाह न करते हुए निरंतर अपनी साधना बहाल रखी । चूंकि उन्होंने बचपन से शादी होने तक सफ़र गाँव में ही तय किया था, उन समस्याओं के बीच ही उन्होंने अपना बचपन, अपनी किशोरावस्था तथा अपनी जवानी के दिनों जिया हैं; इसलिए उन दिनों का प्रभाव मैत्रेयी पुष्पा के लेखनियों में परिलक्षित होना लाज़मी हैं । उनके दिल के तार तब से अब तक गाँव से जुड़ी हुई है । उनका व्यक्तिगत रूप से यह मानना है कि शहर के अपेक्षा गाँव के औरतों के लिए काम करना ज्यादा जरूरी हैं । उनका मानना यह है कि शहर से अधिक गाँव में काम करने की ज्यादा आवश्यकता हैं , वहाँ के महिलाओं को काम की ज्यादा जरूरत हैं , क्योंकि उनका आर्थिक शोषण ज्यादा होता आ रहा हैं । उनलोगों को आत्मनिर्भरशील बनाना अधिक जरूरी हैं ताकि वे आर्थिक तौर पर पुरुषों के साथ आगे बढ़ सके; अपने आप को विवश न पाये,

इसीलिए उन पर ख़ास ध्यान देना चाहिए । शायद इन्हीं कारणों से मैत्रेयी पुष्पा ने विशेष रूप से गाँव की महिलाओं को चुना, उनके दुखों का मार्मिक वर्णन अपने उपन्यासों, कहानियों में प्रस्तुत किया हैं । जो लोग (विशेषकर महिलाएँ) अपने मौलिक अधिकारों से वंचित हैं; उन्हें उन अधिकारों के प्रति जागरूक तथा परिचित कराने की चेष्टा की है । मैत्रेयी पुष्पा का यह प्रयास निसन्देह सराहनीय है । उनका अब तक का सफ़र काफी संघर्षपूर्ण रहा हैं । उनकी सृष्टि की सराहना करते हुए रामचंद तिवारी जी कहते है कि, " उनके उपन्यास अंचल-विशेष के रंग में रंगकर भी आंचलिक नहीं है । उनमें गाँव का आदमी अकेला नहीं है । उसके साथ प्रकृति है, पारंपरिक संस्कार हैं, लोक-देवता है, जातीय स्मृतियाँ हैं और पूरी लोक-संस्कृति है । उनके नारी पात्र अधिक सक्रिय, सजग और प्रभावी हैं । उनकी नारी-चेतना मुक विद्रोह से चलकर मुखर सामूहिक संघर्ष की दिशा में अग्रसर हुई है ।"[2]

2.1.1. मैत्रेयी पुष्पा: जीवन परिचय

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवंबर 1944 को अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा गाँव में हुआ था । उनका प्रारम्भिक जीवन झाँसी जिले के खिल्ली गाँव में हुआ; जो बुंदेलखंड के अंतर्गत आता है । बुन्देली और ब्रज दोनों भाषाओं में मैत्रेयी पुष्पा माहिर है । बचपन में ही उनके पिताजी का देहांत हो गया था; तब वे महज डेर साल की बच्ची थी । मैत्रेयी पुष्पा के दस साल की अवस्था में उनके बाबा (पितामह) भी गुजर गए । उनके कोई भाई-बहन या चाचा-ताऊ भी नहीं थे । उनके माताजी जी ने विधवा होने के बाद पढ़ना शुरू कर दिया था और बड़ी मेहनत से मैत्रेयी पुष्पा को भी पढ़ाया ताकि उनकी बेटी जीवन में कुछ बन पाये और एक अच्छी जिंदेगी जी सके । उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपनी गाँव में ही प्राप्त की थी । परंतु उसके लिए उन्हें बहुत से बाधाओं का सामना करना पड़ा था । फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी थी; बहुत मेहनत करके कॉलेज में एम॰ए॰ (हिन्दी साहित्य) की शिक्षा ग्रहण की थी । अपने जीवन के इस पड़ाव के बारे में अपने अनुभवों को उन्होंने कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है, "माँ ने विधवा होने के बाद पढ़ना शुरू कर

दिया और जब मैंने होश संभाला तब वे नौकरी (ग्रामसेविका) के लिए गाँव से चार सौ किलोमीटर दूर निकाल चुकी थी । मैं अकेली बच्ची के रूप में किस तरह से पढ़ती रही, पड़ोसियों और तेरे-मेरे घर रहकर । इसलिए ही शायद लड़की होने के नाते लड़की के शरीर को लेकर मेरे अनुभव खट्टे ही नहीं, कड़वे रहे और जान लिया कि सच्चाई हमेशा कड़वी होती है, जिसे सहन करना न शिकार को रास आता, न खुलना शिकारी को । मैं कह सकती हूँ कि मेरा बचपन पाँच वर्ष की अवस्था में खत्म हो गया और किशोरावस्था ग्यारह वर्ष की अवस्था में, क्योंकि मैं इस अवस्था तक वह सब कुछ समझ गई थी, जिसके कारण औरत पीड़ित, प्रताड़ित और बदनाम की जाती है । हाँ, यदि कुछ जिंदेगी में सकारात्मक हुआ तो वह थी एम॰ए॰ (हिन्दी साहित्य) तक की शिक्षा ।"[3] मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी स्नातकोत्तर की शिक्षा बुंदेलखंड कॉलेज, झांसी से पूरा किया था । वह भी रोज़ाना गाँव से आना जाना करते हुये... शिक्षा समाप्त करने के तुरंत बाद ही उन्होंने 'डॉ रमेश शर्मा' से शादी कर ली थी; जो एक डॉक्टर है। आश्चर्य की बात यह है कि उनकी माताजी इतनी जल्दी शादी करने के फैसले के खिलाफ़ थी। उनका मन था कि मैत्रेयी पुष्पा और पढ़े, आगे बढ़े । अपने माँ की इस आधुनिक और दृढ़ सोच के बारें में वे कहती है कि, "खैर, तो मेरी माताजी मुझसे भी ज्यादा तेज़ थीं । वह तो मेरे विवाह के ही पक्ष में नहीं थीं, पर मैंने जिद से शादी की । मैंने हमेशा उनकी बात का विरोध किया । मैंने कभी नहीं स्वीकारा। पर अनजाने ही में कैसे माँ के ये गुण मेरे खून में आ गए, मैं नहीं जानती। आपको पता है, मेरी माँ ने कभी आम माँओं की तरह मुझे शादी के समय शिक्षा नहीं दी, जैसे और माँयें देती हैं कि पति की सेवा करना, सबका खयाल रखना, ठीक तरह से काम करना। मेरी माँ ने कहा- 'देख, वहाँ जाते ही चूल्हा-चौका में ही मत लग जाना । नहीं तो जिंदेगी-भर तुझसे चूल्हा-चौका ही कराएगा। मैंने तुझे इसलिए नहीं पढ़ाया है ।"[4] परंतु शादी के बाद सच में मैत्रेयी पुष्पा चूल्हा-चौके में फँस गयी थी । सफल पत्नी और अच्छी माता बनने के चक्कर में वे अपने आप को भूलने लगी । उनकी क्षमता, इच्छा आदि सब पीछे छूटने लगा। लेकिन इसके पीछे और एक संवेदनशील कारण भी निहित है । एक के बाद एक करके मैत्रेयी पुष्पा की तीन बेटियाँ हुई; तो लोग तरह तरह की बातें

करने लगें । यँ सब देखकर उन्होंने यह ठान लिया कि वे अपने तीनों बेटियों कुछ बनाकर दिखायेंगी; तो बस इस सपने को साकार करने पीछे उन्होंने दिन रात एक कर दिया और तीनों बेटियों को इस लायक बनाया कि दुवारा कोई किसी प्रकार की बात न बना सके । अपने इस संकल्प के बारें में मैत्रेयी पुष्पा कहती है कि, " फिर क्या हुआ कि लड़कियाँ तीन । वे भी मेरे लिए एक चुनौती। जीवन में चुनौती ही चुनौतियाँ रहीं । सब लोग हमसे कह के जाएँ कि क्या है ? तुम ने तो सर्वनाश कर डाला । ऐसी जन्मी कि पिता मर गयी । एक मेरा भाई भी था, वह भी मर गया और यहाँ आई तो तीन लड़कियाँ पैदा कर दीं । मतलब अभागी हो । तब मैं मन ही मन सोचती कि मेरी बच्चियों से ऐसा मत कहो । मैं तुम्हें इसको बना के दिखाऊँगी । तो पूरे साल जब से उन्होंने पढ़ना शुरू किया मुझे नहीं याद रहा कि मैं कहाँ हूँ । मैं उन्हीं के साथ बैठी रहती थी ।"[5] तो इस प्रकार उन्होंने अपना संकल्प पूरा किया । उन्हीं दिनों के बीच अपने माँ को घर में ऐसे ही बैठे रहते देख बेटियों से मैत्रेयी पुष्पा से कुछ लिखने का आग्रह किया । उनकी बड़ी बेटी जब एम.बी.बी.एस. कर चुकी थी, तब उन्होंने अपने माँ से आग्रह किया कि माँ आप दिन भर क्या करती हो? कुछ लिखा करो । तो ऐसे मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का सफ़र शुरू हुआ, जो अब तक बरकरार है । पहले तो वे बहुत डरते थे; परंतु अपने बेटियों के प्रोत्साहन ने उन्हे प्रेरित किया और वे आगे बढ़ती गई । मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में, " मेरे यहाँ उल्टा हुआ है, बच्चों को डॉक्टर मैंने बनाया और मुझे लेखिका बच्चियों ने बनाया । हाँ, तो उन्होंने कहा, मम्मी! कविता लिखो, कहानी लिखो, कुछ भी लिखो । तो मैंने एक प्रेम-कहानी लिखी । फिर मैंने तीनों बच्चियों को बारी-बारी पढ़वाई । उन्होंने कहा, मम्मी ने लिखी है, मम्मी ने लिखी है, पढ़ी तीनों ने, बहुत बढ़िया है ।"[6] मैत्रेयी पुष्पा की सबसे पहली कहानी सन 1990 के 8 अप्रैल को 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में प्रकाशित हुई थी । कहानी की विशेषता यह थी कि वह बुन्देली भाषा में लिखी गई थी । बस, ऐसे ही सिलसिला शुरू हुआ, वे कहानियाँ लिखती गई और लोगों के बीच कहानियों ने अपनी जगह बना ली । उसके बाद अपनी आठ-दस कहानियों को मिलाकर उन्होंने 'चिन्हार' कहानी संग्रह का निर्माण किया । फिर मैत्रेयी पुष्पा ने अपना पहला उपन्यास लिखा-'बेतवा

बहती रही' । उसके बाद से आज तक उनका सृजन आबाद है । वे निरंतर लिखती ही जा रही है । 'इदन्नमम' ने मैत्रेयी पुष्पा पहचान बनायी और उनकी चर्चा पूरे देश भर में होने लगी । शुरू शुरू में मैत्रेयी पुष्पा कॉलेज में काम करती थी परंतु अब वे स्वतंत्र लेखन में व्यस्त है । उनको गाँव में जाकर वहाँ के लोगों के बीच रहना, उन समस्याओं को समझना, उनका हल निकालना ज्यादा अच्छा लगता है । उनको शहर कभी नहीं भाया । आप भले ही शहर में रहीं परंतु, आपको यहाँ के वादियाँ कभी छु भी न पायी । मैत्रेयी पुष्पा तन-मन से गाँव से जुड़ी हुई है; ठीक वैसे, जैसे कोई पेड़ अपनी मिट्टी से जुड़ा रहता है । अपने इस लगाव को स्वीकारती हुई आप कहती है, "तो अनुभव मैंने बनाए नहीं, छोड़े नहीं, वे संचित थे और उनमें और अनुभव जुड़ते चले गए । बचपन मेरा गाँव में बीता । शादी भी गाँव में ही हुई । एम.ए. करने तक एक प्रकार से गाँव में ही थी । अभी भी गाँव जाती हूँ । इसलिए आपने देखा कि मेरे रचनाओं में पहले का भी गाँव है, आज का भी गाँव है । आज गाँव बिलकुल बदल गए हैं । मैं सारे परिवर्तन को भोगती हूँ- मुझे वहाँ रहना पड़ता है, झगड़ना पड़ता है, पंचायत करनी पड़ती है, यह सब वहाँ जरूरी हो जाता है ।" [7]

मैत्रेयी पुष्पा ने जिस प्रकार इतने बाधाओं के बाबजुद अपनी पढ़ाई जारी रखी, निसंदेह वह दूसरी लड़कियों ने प्रेरणादायक है । उनके जीवन के दूसरे पड़ाव से तो अन्य नारियों को सीख लेनी चाहिए । नारी चाहे तो क्या नहीं कर सकती है; एक अच्छी पत्नी तथा सफल मातृ होने के उपरांत, अपने कोशिशों के बल पर उन्होंने अपने आप को एक सफल लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित किया । इससे अच्छा उदाहरण भला और क्या हो सकता है ! हर इच्छुक तथा प्रतिभासम्पन्न नारी के लिए मैत्रेयी पुष्पा एक आदर्श है ।

2.1.2. मैत्रेयी पुष्पा का साहित्यिक परिचय:

मैत्रेयी पुष्पा ने भले ही देर से लिखना प्रारम्भ किया हो, फिरभी इतने कम समय में उन्होंने लोगों के दिलों में अपने लिए एक खास जगह बना ली है ; जो किसी भी एक लेखक/लेखिका के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात होती हैं । उनके बेबाकीपन तथा निडर

व्यक्तित्व ने उनकी रचनाओं को मानो और ज्यादा ताकतवर एवं प्रभावशाली बना दिया हैं । साथ ही भाषा की सरलता तथा वहाँ ग्रामीण परिवेश के संमिश्रण ने उसमें चार चाँद लगा दिया हैं । मैत्रेयी पुष्पा पर गोर्की, स्टीफनज्विग, टालस्टाय, प्रेमचंद, रेणु, श्री लाल शुक्ल, अनंत यादव आदि साहित्यकारों का प्रभाव रहा हैं । इन लोगों की ग्रामीण पृष्टभूमि ने उन्हें काफ़ी आकर्षित किया था । सन 1990 से अब तक उन्होंने जितनी भी रचनाएँ की हैं, प्रायः सभी ने पाठकों के मन में प्रभाव विस्तार किया हैं । उसमें उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, स्त्री-लेखन, नाटक आदि विधाओं का समावेश हुआ हैं । सभी विधाओं को मैत्रेयी पुष्पा ने बख़ूबी निभाया हैं । चाहे वह उपन्यास-कहानी हो, या फिर स्त्री-लेखन-आत्मकथा आदि ही हो ! हर क्षेत्र में उन्होंने स्पष्ट और प्रासंगिक विषयों का आकलन किया हैं । मैत्रेयी पुष्पा के रचना-समग्र का एक सम्यक विवरण कुछ इस प्रकार दिया जा सकता हैं-

कहानी संग्रह :

- *फाइतर की डायरी*
- *समग्र कहानियाँ अब तक*
- *दस प्रतिनिधि कहानियाँ*
- *पियारी का सपना*
- *गोमा हँसती है*
- *लालमनियाँ*
- *चिन्हार*

उपन्यास :

- *गुनाह वेगुनाह*

- *कही ईसुरी फाग*
- *त्रिया हठ*
- *बेतवा बहती रही*
- *इदन्नमम*
- *चाक*
- *झूला नट*
- *अल्मा कबूतरी*
- *विजन*
- *आगनपाखी*
- *फ़रिस्ते निकले*

आत्मजीवनी :

- *गुड़िया भीतर गुड़िया*
- *कस्तुरी कुंडल बसे*

नाटक :

- *मन्दाक्रान्ता*

टेलीफिल्म:

- '*वसुमती की चिट्ठी*', *फ़ैसला* कहानी के आधार पर

स्त्री लेखन:

- *खुली खिड़कियाँ*
- *सुनो मालिक सुनो*
- *चर्चा हमारा*
- *आवाज़*
- *तबदील निगाहे*

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य की विशेषताएँ तथा उनकी शैली:

यद्यपि मैत्रेयी पुष्पा जी बहुत देर से लिखना शुरू किया था फिर भी उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से एक नई सोच को उत्पन्न किया है । वह कहते है न 'देर आए, दुरुस्त आए' ; तो बस, कुछ ऐसा ही हुआ मैत्रेयी पुष्पा के साथ भी... उनके हर एक उपन्यास के पात्रों का चुनाव तथा उनका सूक्ष्म विवेचन वाकई काविले तारीफ़ है । समान्तराल रूप से उनकी कहानियाँ भी प्रसिद्ध एवं प्रासंगिक हैं । उनके स्त्री-विमर्श की आलोचनाएँ भी उतनी ही सशक्त है, जितनी की उनकी उपन्यास, कहानी आदि । वे 'राष्ट्रीय सहारा' पत्रिका की नियमित लेखिका के रूप भी रही है । आपकी आत्मजीवनी के दोनों खंडों ने तो हिन्दी कथा साहित्य को मानो हिलाकर ही रख दिया । जिसके लिए उन्हें भारी समालोचना का सामना करना पड़ा, इतना ही नहीं अपने आत्मजीवनी के चलते आपको व्यक्तिगत जीवन में भी बहुत से सवालों को जबाब देना पड़ा था । मैत्रेयी पुष्पा के परिवार के बहुत से लोगों ने इसपर काफ़ी आपत्ति भी उठायी थी। अपने साक्षात्कार में उन्होंने खुद यह स्वीकार करते हुये कहा है कि, "पति ने मेरी किताबें पहले-पहले समीक्षाओं के जरिए ही पढ़ी हैं और मान लिया कि उनकी सुशील पत्नी के रूप में ढाली गई स्त्री, मैत्रेयी पुष्पा का रूप धरकर उनके घर आबरू की धज्जियाँ उड़ा रही है। लोग क्या सोच रहे होंगे इस स्त्री के पति के बारे में ?

'चाक' इसको मत देना, उसको मत देना, उसक मत देना की हिदायतें मुझे अकसर मिलती और में अलबेली 'चाक' उपन्यास अपने जेठ को ही दे बैठी । जेठ ने पुस्तक पढ़ी या नहीं, लेकिन तब के बाद जब भी वे घर आए और मैंने दरवाजा खोला, वे पीठ फेरकर खड़े हो गए । निर्लज्ज बहू के मर्यादा पुरुषोत्तम जेठ...मैंने बहुत कुछ समझ लिया ।" [8] जब उनसे पूछा गया था कि साहित्य रचने के पीछे कौन से बातें उन्हें सबसे ज्यादा प्रेरित करती है? तब उन्होंने जबाब में कहा कि, "लड़कियों की बहादुरी ने मुझे लिखने के लिए मज़बूर किया । पितृसत्तात्मक समाज सबको डराता है, मैंने माना, लेकिन इस पर भी गौर किया जाए कि जो डराने की जिद पारा जाए, समझिए कि वह सबसे डरता है । 'फाइटर की डायरी' नाम की किताब, जो मैंने लिखी है, उसमें पितृसत्तात्मक समाज के मान्यताप्राप्त अपराध खुलते चले जाते हैं । चुनौती मैं नहीं, लड़कियाँ देती हैं ।"[9] पटभूमि का चुनाव मैत्रेयी पुष्पा की लेखन शैली की अन्यतम विशेषता रही है। तरक्की तथा आधुनिकता के चकाचौंध से भरी समाज में रहकर भी वे गाँव की नसों से जुड़ी हुई थी । उस मिट्टी की सुगंध को लेखिका कभी भूल नहीं पायी । जिसके चलते उनके अधिकतर उपन्यास गाँव तथा ग्रामीण परिवेश पर ही केंद्रित है । उनकी नायिकाएँ भी ज़्यादातर तथाकथित आधुनिक नारी न होकर सहज, सरल गाँव की लड़की होती है; और जो अपने सहज और सीमित ज्ञान से ही प्रगतिशील चिंता की और उन्मुख होती नज़र आती हैं । वर्तमान की नवीन लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा शायद अकेली ऐसी लेखिका है, जिन्होंने ग्रामीण जीवन को अपना मुख्य तत्व बनाया है । जिनके नायिकाओं ने गाँव की पुरखों की परम्पराओं को मानने से इन्कार किया तथा वर्षों से चलती आ रही पुरुषों के अत्याचारों का खुलकर विरोध किया । इतना ही नहीं मैत्रेयी पुष्पा की नायिकाएँ इतनी साहसी और निडर है कि वे गाँव के विषैली राजनीति के खिलाफ़ भी आवाज़ उठाती हैं, यह जानने के बाबजूद भी कि, गाँव की यह विषैली राजनीति उसका सबकुछ तबाह कर सकती है; वे कभी पीछे नहीं हटती है । हिन्दी कथा साहित्य में ख़ासकरके महिला कथाकारों में यह दृश्य दुष्प्राप्य है । निश्चित रूप से यह एक सराहनीय भूमिका के रूप में पाठकों के सामने आती हैं । अपने इस प्रयोग को वे स्वाभाविक मानते है ।

उनका कहना है कि चूंकि उन्होंने अपना बचपन और किशोरावस्था गाँव में बिताया है; इसीलिए गाँव उनके बहुत ही करीब है, शहर तो बस उनके रहने का ठिकाना मात्र है, उनकी आत्मा अभी भी गाँव कि गलियों, खेत-खलिहानों में ही बसती है । अपने साक्षात्कार में मैत्रेयी पुष्पा कहती है कि, " यह सच है कि शहर में सालों से रह रही हूँ, पर 'विजन' को छोड़कर और कुछ नहीं लिखा । सच तो यह है कि मुझे लगता है कि जो चीजें साहित्यकार के आदर रस -बस जाती हैं, उनसे वह निकाल नहीं पाता या निकलना नहीं चाहती। आज भी में हर साल गाँव जाती हूँ । वहाँ की समस्याएँ, बातें को मैं यहाँ शहर के चकाचौंध में रहकर कैसे भूल सकती हूँ ? दूसरी बात यह है कि आदमी अपना बचपन और संघर्ष के दिन नहीं भूलता । मेरा बचपन और संघर्ष-भरा जीवन गाँव में बीता है तो लिखते समय वही सब मन में घूमता रहता है ।" [10] मैत्रेयी पुष्पा अपनी साहसिकता तथा बलिष्ठ लेखन शैली के चलते आज सबसे चर्चित एवं सफल कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हो पायी है । राजेन्द्र जी कहते है कि मैत्रेयी पुष्पा ने साहित्य को शहरों की संकीर्ण मानसिकता से गाँव के सहज-सरल स्वाभाविक परिवेश तक ले गयी; जो हिन्दी साहित्य के लिए एक महत्त्वपूर्ण देन रही है। मैत्रेयी पुष्पा वास्तव को अंकित करनेवालों में से है; जो यथार्थ से भागते नहीं, बल्कि डटकर उसका सामना करते है । उन्होंने स्वयं यह स्वीकारा है कि उनके पात्र वास्तव जीवन से प्रेरित है, और क्यों न हो; आखिर जीवन का प्रतिफलन ही तो साहित्य होता है । उन्ही के शब्दों में, "सब वास्तविक और जीते-जागते हैं । स्त्री और पुरुष पात्र दोनों । यह मेरी रचना प्रविधि का एक हिस्सा है कि जीवन को मैं अपनी कल्पना से अर्थ के एकाधिक आयामों से गतिशील करती हूँ । कई बार परिवार वालों ने...रिश्तेदारों ने कहा कि तुमने तो सब खिड़की-दरवाजे खोल डाले। इतनी छूट तुम्हें नहीं दे सकते । एक बार *इदन्नमम* पढ़कर दो लड़के आए। उनके दादा का चरित्र उपन्यास में खलपात्र है । उन्होंने कहा कि ठीक है, दादा जैसे थे वैसा लिखा पुष्पा बहन जी ने । अपने घर की खूंखार परंपरा को बदलने की जरूरत उन्होंने महसूस की ।"[11] खैर, यह तो थोड़ी देर की बात है; जब मैत्रेयी पुष्पा ने लिखना शुरू किया था था तब से वे यथार्थ से प्रेरित थे । इस बात का खुलासा तब होता है, जब उन्होंने अपने साक्षात्कार में यह कहा कि

"...फिर मेंने एक *'बेटी'* कहानी लिखी। सिर्फ़ वही बहुत सिम्पल सरल भाषा कि कैसे मेरी सहेली मुन्नी स्कूल नहीं जाती थी और मैं जाती थी । फिर क्या हुआ, बस वही लिख दिया। वह बड़ी हिट कहानी हो गई ।"[12] तो जो भी हो अपने तेज़ और धारदार लेखन के कारण मैत्रेयी पुष्पा आगे बढ़ती गई । इस सफर में बहुत से लोगों ने उनकी कटु समालोचना भी की हैं; तो बहुजनों ने उनकी भारी प्रशंसा भी की । मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में, "मेरी कृति 'अल्मा कबूतरी' को जब पुरस्कार देने की बात हुई तो कमलेश्वर और कई आलोचकों ने एतराज जताया कि 'उसे ? उसके लिए तो राजेंद्र यादव लिखते हैं।' तो वहाँ उपस्थित अजीत कौर ने एतराज जताया कि 'राजेंद्र यादव एक 'अल्मा कबूतरी' लिखकर दिखा दें तो मानूँ । तो यह तो लोगों की धारणा है । फिलहाल कुछ भी हो, धारदार लेखन अभी और भी आएगा ।" [13] उनको न तो समालोचनाओं ने डराया और न ही प्रशंसाओं गिराया अथवा अहंकारी बनाया । वे तो अपनी अभिव्यक्ति की दुनिया में ही मस्त रही और नारी के भिन्न-भिन्न समस्याओं को समझने का प्रयंत्न करती रही । नए नए चिंताओं तथा यथार्थ के चित्रण में ही उन्होंने अपना सारा ध्यान लगा दिया । मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार उनके साहित्य का सही मूल्यांकन उनके पाठक ही करते थे, हैं और करते रहेंगे । वे हमेशा पाठकों के लिए ही लिखती थीं, हैं और आगे भी उन्हीं के लिए लिखती रहेंगी ।

2.1.3. मैत्रेयी पुष्पा : पुरस्कार और सम्मान

मैत्रेयी पुष्पा के गहन चिंतन एवं सूक्ष्म विवेचनापूर्ण रचनाओं ने निसंदेह हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। लोगों ने उनके रचनाओं का स्वागत किया और उनको सराह भी । हिन्दी के विद्य जगत को न चाहते हुए भी उनका लोहा मानना पड़ा । भारत के विविध भाषाओं में मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं का अनुवाद किया गया है । यहाँ तक कि उनकी रचनाओं ने विदेशों में समादर प्राप्त किया हैं । देश के विविध संस्थानों, अनुष्ठानों ने मैत्रेयी पुष्पा को उनकी अनमोल रचनाओं के लिए सम्मानित किया हैं । इन सम्मानों का एक संक्षिप्त लेखा-जोखा कुछ प्रकार देखा जा सकता है:

- आगरा विश्वविद्यालय गौरव श्री सम्मान [2011]
- वनमाली सम्मान [2011]
- सुधा स्मृति सम्मान [2009], नामवर सिंह द्वारा प्रदान।
- मंगला प्रसाद पारितोषक [2006]
- सरोजनी नायडू पुरस्कार [2003] हांगर प्रोजेक्ट द्वारा प्रदान
- सार्क लिटेरारी अवार्ड (SAARC Literary Award) [2001] उनकी बेहतरीन लेखनी हेतु प्रदान
- *इदन्नमम* को 'कथाक्रम सम्मान' [2000]
- हिन्दी अकादेमी, दिल्ली द्वारा 'साहित्यकार सम्मान' प्रदान [1998]
- *इदन्नमम* को प्रेमचंद सम्मान (उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान) [1996]
- *इदन्नमम* को वीरसिंह जु देव पुरस्कार (मध्य प्रदेश साहित्य संस्थान) [1996]
- *बेतवा बहती रही* को 'प्रेमचंद सम्मान' (उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान) [1995]
- *इदन्नमम* को 'नंजनागुड्डु तिरुमलम्बा' पुरस्कार (शाश्वती संस्था, बैंगलूर) [1995]
- *फ़ैसला* कहानी के लिए 'कथा पुरस्कार' [1993]
- हिन्दी अकादेमी द्वारा 'साहित्य कृति सम्मान' [1991]

2.2 रीता चौधुरी:

वर्तमान असमीया साहित्य-जगत में सबसे जनप्रिय साहित्यकारों में रीता चौधुरी जी का नाम आगे आता है । उन्होंने 1981 से लिखना शुरू किया, वे विशेषकर उपन्यास एवं

कविताओं में रुचि रखती है । पाठक-समाज में उनके उपन्यासें ही ज्यादा प्रिय रहे हैं । उनके उपन्यासों की मौलिकता तथा कथन-भंगिमा ही उनकी जनप्रियता का मुख्य कारण रहा हैं । उन्होंने अब तक जितने भी उपन्यास रचें है; उन सभी में किसी न किसी प्रकार से नारी संवेदना उभरकर आई हैं । उनके लेखनी से समाज के भिन्न वर्ग के स्त्रीओं का दर्द उभरकर आता हैं । उन्होंने हमेशा यथार्थ को अपनी साहित्य का आधार माना है । एक के बाद एक-एक करके रीता चौधुरी ने कई बेहतरीन उपन्यास असमीया पाठक-वर्ग को प्रदान किया हैं । नारी-संवेदना को एक नया आयाम प्रदान करते हुए रीता चौधुरी जी ने असमीया साहित्य को भी समृद्ध किया हैं । उनके उपन्यासों में समय एवं समस्याओं की विविधता रहती हैं, फिरभी उनमें कही न कही नारी संवेदना का समावेश हो ही जाता है । उन्होंने हर एक पहलू को समझने तथा परखने का प्रयत्न किया है । रीता चौधुरी के उपन्यासों की नायिकाएँ मानसिक रूप से सबल होने के साथ साथ अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ भी उठाती हैं । वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों को न्याय दिलवाने के लिए भी लड़ती है । हालाँकि उनके उपन्यासों को लेकर काफी विवाद भी हुए हैं, परंतु रीता चौधुरीने इन सबसे प्रभावित न होते हुए अपने सृजन को जारी रखा है । इसको उनके व्यक्तित्व का एक अनोखा चरण भी कहा जा सकता है । वे न तो पुरस्कारों के लिए उत्सुक रहती हैं और न ही प्रशंसा के लिए अपेक्षा करती हैं । एक सच्चे तथा सफल साहित्यकार में इस गुण का होना अत्यंत आवश्यक माना जाता है । उनका मानना यह रहा हैं कि साहित्य अगर सफल है, तो वह बस पाठकों के दम पर । पाठकों ने जिसे अपनाया हो वही साहित्यकार सफल होता हैं । उनके शब्दों में, “ पुरस्कार उत्साह देती है, प्रेरणा देती है, प्रचार कराती है, पाठक-समालोचकों की दृष्टि आकर्षित कराती है । एक बात सही है कि, साहित्य अच्छा होने से भी बिना पुरस्कार के पाठक-समाज के केंद्र में आना जरा कठिन हो जाता है । परंतु उत्तरण के लिए साधना अनिवार्य है । पुरस्कार तो बस पीछे रहकर उसे थोड़ा और आगे तक धकेल सकता है ।” [14] रीता चौधुरी स्वयं तेजस्विनी हैं और उनकी नायिकाएँ भी उन्हीं की तरह तेजस्विनी तथा

बुद्धिमती हैं। उनके उपन्यासों में वर्तमान तथा आनेवाली पीढ़ी के लिए कई महत्त्वपूर्ण संदेश छिपी रहती हैं।

2.2.1. रीता चौधुरी : जीवन परिचय

रीता चौधुरी जी का जन्म 20 अगस्त, 1960 को अरुणाचल के टिराप जिले में हुआ था। बिरजानन्द चौधुरी उनके पिता थे। वर्तमान रीता चौधुरी असम के गुवाहाटी शहर के निवासी है और साथ नेशनल बूक ट्रस्ट की संचालिका के पद में अधिष्ठित हैं। उनका बचपन अरुणाचल के लोहित जिले के चौखाम नामक जगह पर बीता। उसके बाद हाफलांग जिले के आपार हाफलांग एल.पी. स्कूल से उन्होंने अपनी पढ़ाई शुरू की। नौकरी के सिलसिले से अक्सर पिता का तबादला हो जाता था; तो इसलिए उनकी शिक्षा असम के भिन्न प्रांत में से गुजरते हुए संपन्न हुई थी। हाफलांग के बाद किसी अज्ञात बंगाली स्कूल में रीता चौधुरीने अपनी चौथे/पाँचवी कक्षा की पढ़ाई की थी। इस परिक्रमा के पश्चात वे असम के मार्घेरिता नामक स्थान में आ पहुँची। वही मार्घेरिता हायार सेकेंदारी से रीता चौधुरी जी ने अपनी दसवीं कक्षा की पढ़ाई समाप्त की। यहाँ तक उनके पढ़ाई को बाधाएँ तो मिली थी; परंतु वे केवल विद्यालय परिवर्तन संबंधी बाधाएँ थी। असली अग्निपरीक्षा तो उसके बाद शुरू हुई थी। जब समग्र असम में 'असम आंदोलन' की आग जोरों से फैल रही थी, तब रीता चौधुरी दसवीं की परीक्षा दे चुकी थी। अपनी साहसिक प्रवृत्ति तथा सहज देशप्रेम ने रीता चौधुरीको आंदोलन का सक्रिय सदस्य बनने पर आखिरकार मज़बूर कर ही दिया। बस इसी से उनकी उच्च शिक्षा में कई तरह की बाधाएँ उत्पन्न होने लगी। उन्होंने अपने जीवन के करीब पाँच साल इस आंदोलन के दौरान गँवा दिया। कई बार उन्हें छिपना भी पड़ा था। सक्रिय सदस्य होने के नाते यह सब करना जरूरी हो गया था। यही नहीं, रीता चौधुरीको इस आंदोलन के ख़ातिर दो बार गुवाहाटी में और एक बार डिब्रुगढ़ में कारवास भी काटना पड़ा था। परंतु इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी रीता चौधुरी ने हार नहीं मानी थी, उन्होंने अपना पहला उपन्यास इन्हीं दिनों में लिखा था; जब वे

अज्ञातवास में थी तभी उन्होंने 'अबिरत जात्रा' का स्रजन किया था । जो सन 1981 में प्रकाशित हुई । अपने जीवन में आए इतने सारें विपदाओं के बाबजूद रीता चौधुरीअपनी उच्च शिक्षा का ख्याव नहीं छोड़ा । पाँच सालों के अंतराल के बाद गुवाहाटी के किसी अज्ञात (उन दिनों) महाविद्यालय 'कन्या महाविद्यालय' से उन्होंने अपनी बारह वीं की पढ़ाई पूरी की । अपने अदम्य ईछा शक्ति से मनुष्य कुछ भी कर सकता है, रीता चौधुरीका जीवन इस बात का सबूत है । असम तथा भारत की महिलाओं के लिए रीता चौधुरीका शिक्षा जीवन एक आदर्श है । जिसमें उन्होंने केवल अपने 'कभी हार न मानने वाली' प्रवृत्ति के कारण लाख बाधाओं का अतिक्रम कर अपने लक्ष्य के प्रति आगे बढ़ती हुई दिखाई देती है । बारह वीं के बाद उनके केरियर को जैसे एक सीढ़ी मिल गयी; उसके बाद रीता चौधुरी ने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा । उन्होंने असम के प्रख्यात शिक्षानुस्थान कॉटन महाविद्यालय से राजनीति विज्ञान में अपना स्नातक का पाठ्यक्रम सम्पूर्ण किया । तत्पश्च्यात उन्होंने ने गौहाती विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर (राजनीति विज्ञान) की परीक्षा भी पास कर ली, वह भी प्रथम कक्षा के द्वितीय स्थान के सहित । केवल इतना ही नहीं, ज्ञानार्जन के प्रति रहे अपने मोह के कारण उन्होंने असमीया में भी स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की और साथ ही विविध व्यस्तताओं के होते हुए भी एल.एल.बी. की पढ़ाई पूरी कर डाली। इन दोनों परीक्षाओं में वे अवल आई थीं । इसके पच्यात उन्होंने पी. एच. डी. की पढ़ाई पूरी की । उनके शोध कार्य भी तुलनात्मक रहा हैं । उनकी इच्छाशक्ति की तरह ही उनका मन भी सुदृढ़ था । जिस कार्य को पूरा करने के बारें में सोचेंगी, उसे पूरा करके ही दम लेती हैं ; चाहे वह पढ़ाई हो या फिर साहित्य ! दोनों उनके बहुत करीब हैं । उच्च शिक्षा समापन के बाद असम के डिफू कॉलेज में उनकी नौकरी लग गयी । उसके कुछ वर्षों के बाद गुवाहाटी स्थित कॉटन कॉलेज में वे अध्यापिका के रूप में नियुक्त हो गयी और इसी बीच आपने अपना शोध कार्य भी पूरा कर लिया । वर्तमान वे नेशनल बूक ट्रस्ट की संचालिका के रूप में कार्यरत हैं । उनका विवाह एक राजनीतिविद से ही हो गया था । 'चद्रमोहन पाटोवारी' उनके पति का नाम है । रीता चौधुरी को दो सन्तानें हुई, एक लड़का और एक लड़की । लड़की बड़ी है । अपने बच्चों

के साथ उनका व्यवहार मित्रवत रहा है । उनका यह मानना रहा है कि बच्चों के साथ दोस्त बनकर ही उनको अच्छी तरह से समझना संभव हो पाता है । कॉलेज के दिनों से लेकर अब तक उनका सृजन जारी रहा हैं । उन्होंने लगातार अच्छे साहित्य के निर्माण का श्रेय प्राप्त किया है । उनके उपन्यासों में समय की मांग पर खासकर ध्यान दिया जाता है । रीता चौधुरी का जीवन असम तथा भारत के अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणादायक है; जिस प्रकार उन्होंने इतने मुसकिलों के बाद भी अपनी पढ़ाई जारी राखी, वह कोई साधारण बात नहीं है । ऐसा करने के लिए व्यक्ति का अपने अंदर सम्पूर्ण आत्मविश्वास तथा साहस का होना अत्यंत आवश्यक है । अपने साहित्यिक जीवन के इस परिक्रमा के बारें उनका कहना है कि, " मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं साहित्यकार बनूँगी । साहित्य के प्रति रुचि थी, इसीलिए पहले कविता लिखती थी । साहित्य के विविध किताबों को पढ़ने के बाद लिखने की बड़ी इच्छा होती थी, इसलिए घर में ऐसे ही कुछ कुछ लिखती थी, अच्छा भी लगता था । परंतु एक बात सही थी कि मुझे अपनी सृजन पर पूरा विश्वास था । इस विश्वास ने मुझे अपने साहित्यिक जीवन में काफी मदद की है ।"[15]

2.2.2. रीता चौधुरी का साहित्यिक परिचय:

रीता चौधुरीने अपने अनुभव के पिटारे से अपने साहित्यों का निर्माण किया हैं । उन साहित्यों में कुछ कविताओं का संकलन हैं और शेष सभी उपन्यास हैं । हाँ, उन्होंने दो-एक कहानियाँ भी लिखी हैं , परंतु उनका मन उपन्यास में ही रमता है । उनकी कथा-शेली ने विशेषकर लोगों के दिलों में राज किया है । रीता चौधुरीने विद्यार्थी जीवन से ही लिखना शुरू किया था । जैसे जैसे अभिज्ञतायें बढ़ती गई, लेखन उतना ही पुष्ट होता गया; जीवन का रंग उनमें और गहरा उतरता चला गया । समाज के विविध समय के समस्याओं का उजागर करते हुए उनमें नारी की अहम भूमिका का चित्रण उनके उपन्यासों में परिलक्षित होता है । उनकी कवितायें में भी जीवन के मार्मिक अनुभूतिओं का चित्रण प्रस्फुटित हुआ है । उनकी रचनाएँ संगिक और अनुभूतिपरक होती हैं । उनके सृजन पर एक नज़र कुछ इस प्रकार डाला सकता हैं-

उपन्यास :

- *अबिरत जात्रा,*
- *महाजीवनर आधारशिला,*
- *पपीया तरार साधु,*
- *तीर्थभूमि,*
- *नयना तराली सुजाता,*
- *राग मालकोश,*
- *जलपद्म,*
- *हृदयनिरुपाई,*
- *देउलांखुइ,*
- *एइसमय सेइ समय,*
- *माकाम,*
- *मायाबृत्त,*
- *विभ्रांत वास्तव*

कविता संग्रह :

- *प्रत्याशार स्वप्न,*
- *सुंदर नक्षत्र,*
- *बनोरिया बताहोर सुहुरी,*
- *अलोप आंधार अलोप पोहर,*
- *बगा मातिर तुलसी,*

कहानी: *आधा गोढ़ा एटा गल्प*

इसके अलाबा हिन्दी, बंगाली, अँग्रेजी आदि भाषाओं में इनके उपन्यासों का अनुवाद भी हुआ है । हाल ही में उनके नवीनतम उपन्यास '*मायाबृत*' के तमिल अनुवाद को सम्मानित किया गया है ।

रीता चौधुरी के साहित्य की विशेषताएँ तथा उनकी शैली :

रीता चौधुरी अपनी कथन-शैली के लिए सबसे ज्यादा लोकप्रिय रही हैं । वे जिस अंदाज से कथा को आगे बढ़ाती है, पाठक अपने आप ही कथा-प्रवाह में बहती जाती है और स्वयं को उस कथानक का हिस्सा मानने लगते हैं । किसी भी रचनाकर के लिए निसंदेह यह एक बड़ी उपलब्धि हैं । स्रजक का मूल्यांकन पाठक के बिना भला कैसे हो सकता है, अगर एक बार पाठक ने उन्हें हृदय में पनाह दे दी हो, तो स्रजक विवादों से भी नहीं डरते हैं । किसी भी साहित्य के लिए कथन-शैली का अपना ही एक महत्त्व रहता है । इस बारें जब उनसे प्रश्न किया गया तब उन्होंने कहा कि, " हर लेखक की अपनी एक निर्धारित कथन-शैली होती है, मेरी भी अपनी निर्धारित कथन-शैली है । कुछ कथन-शैली ऐसी होती है, जो पाठकों के हृदय को छू लेती हैं । जो पाठक- लेखक अथवा विषयवस्तु के बीच तादात्म्य स्थापित करता है । एक उपन्यास में कथन-शैली का बहुत महत्त्व होता है..." [16] रीता चौधुरी ने अपने उपन्यासों में नारी संवेदना को सूक्ष्म रूप से दर्शाया है । *पपीया तोरार साधु* नामक उपन्यास में उन्होंने एक आकांक्षी युवती का चित्रण किया है । जो किसी एक गाँव के गरीब घर से पत्रकार बनने का सपना लेकर शहर में आती है, पर कुछ असाधु प्रवृत्ति के साजिसों के चलते उसका जीवननष्ट हो जाता है । यहाँ तक कि उसे पागल करार देकर आत्महत्या करने पर मज़बूर कर दिया जाता है । तथाकथित बौद्धिक सम्माज के इस नग्न स्वरूप को उभारने के कारण रीता चौधुरी पर तरह तरह के आरोप भी लगाए गए थे, परंतु वे किसी से भी नहीं डरी, किसी हानि के परवाह किए बिना आगे बढ़ती गई । असम के समालोचक समाज के विद्वानों में किसी ने भी इस उपन्यास की आलोचना प्रस्तुत नहीं की । फिरभी यह उपन्यास आज भी लोगों के दिलों पर राज करता हुई

नज़र आता हैं । यही तो वास्तविकता है, जिससे लोग आज भागने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें वहाँ अपना घिनोना चेहरा प्रतिफलित होता नज़र आता हैं । इस विषय में रीता चौधुरी का कहना है कि, " *पपीया तोरार साधु* उपन्यास में चित्रित 'जेउति' एक प्रतिनिधित्व मूलक चरित्र है । 'जेउति' जैसे कई पात्र ऐसे हैं, जो समाज के पिछड़े हुए हिस्से से आस्था और सपनों से भरा मन लेकर बाहर आती हैं, परंतु क्षमता में रहे कुछ लोग उनका शोषण करना चाहते हैं। ऐसे चरित्र केवल असम के संस्कृति और संवाद माध्यम में ही नहीं, बल्कि असम के बाहर भी ऐसे चरित्र परिलक्षित होते हैं। " [17] केवल एक उपन्यास ही नहीं, उनके हर उपन्यास में नारी-मन को समझने का प्रयास किया गया है । रीता चौधुरी के जीवन में एक बहुत ही दुखद घटना संघटित हुई थी । जब वे महज 9/10 साल की रही होगी, उनकी दीदी की मृत्यु हो गयी थी; इस घटना ने उनपर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा । इसके पश्चात अचानक उनका बचपन जैसे छूट सा गया और इस घटना ने उनके मन में गहन चिंता की पुट छोड़ दी । उन्होंने अपनी सृजन का कारण 'जिज्ञासा' को माना है । अपने अदम्य जिज्ञासा के चलते उन्होंने अपने साहित्य में जीवन का सजीव रंग डाला हैं । अपने साहित्यिक जीवन में प्रेरणा के बारें उनका कहना है कि, " शुरुवात में मुझे किसी से प्रेरणा नहीं मिली थी। लिखने कि अदम्य इच्छा थी, इसलिए प्रेरणा नहीं मिलने से भी मैं लिखती थी । आज शायद मेरे बहुत शुभचिंतक हैं ।"[18] खेर जो भी हो, रीता चौधुरी ने लिखा और वह भी निडर होकर, इस पितृसत्तात्मक समाज में निडर होकर लिखना एक बहुत बड़ी चुनौती है; जिसका सामना रीता चौधुरी को करना पड़ रहा हैं । उनकी नायिकाएँ रूढ़ि-परंपरा के विरोधी है, खुलकर अन्याय का विरोध भी करती हैं । वे यथार्थ पर विश्वास रखती है और वह समय सापेक्ष होता है । उन्होंने सदा समय की मांग का ध्यान रखा हैं । उनका मानना यह है कि सभी के उपन्यास एक निर्दिष्ट समय का प्रतिनिधितत्व करता हैं । केवल मेरे उपन्यास ही ऐसा करते हैं, ऐसी बात नहीं है । हर एक उपन्यास को एक निर्दिष्ट समय का प्रतिनिधितत्व करना ही पड़ता है... उनके उपन्यासों की पटभूमि कई बार उनकी जीवन की अभिज्ञताओं पर भी आधृत होती परिलक्षित होती है । रीता चौधुरी के मुख से, " राजीव ईश्वर में

जिस शिशु का वर्णन किया गया है, उसे मैंने दिसपुर के फुटपाथ में देखा था । अभिभावक रहित एक सुंदर शिशु, जो चीटी के काटने तथा कौवे के नौचने के वजह से चटपटा रहा था । मैंने उस शिशु के विषय में परवर्ती समय में काफी अध्ययन किए और काफी तथ्य भी प्राप्त किए । उसीके फलस्वरूप *राजीव ईश्वर* का जन्म हुआ । दूसरी ओर *हृदय निरुपाय* उपन्यास भी सच्ची घटना पर आधारित है, परंतु स्थान के बारें में नहीं कह सकती ।" [19] रीता चौधुरी ने हमेशा निरपेक्ष रूप में साहित्य सृजन का प्रयास किया है। इस संदर्भ में उनका मानना है कि कलम हाथ में लेते ही वे किसी की होकर नहीं रहती । तब वे पूर्ण रूप से एक अलग मनुष्य बन जाती हैं जो सत्य और न्याय के लिए आवाज़ उठाती हुई परिलक्षित होती हैं । उन्होंने हमेशा आनेवाले भविष्य के बारें में सोचा हैं। उनके उपन्यासों या वार्तालापों से भी यह बात स्पष्ट होती है । उन्हें युवाओं से बहुत उम्मीद हैं । उनका मानना है कि नई पीढ़ी बहुत कुछ कर सकती हैं, उनमें अनेक संभावनायें छिपी हुई हैं । साधना एवं कठोर श्रम से उस हूनर को तराशा जा सकता है । स्वयं रीता चौधुरी का यह प्रयास रहा है कि वे नई पीढ़ी के साथ वक्त गुजारे और उनकी भावनाओं और उम्मीदों को समझ सके । उनका कहना है कि, " 'आधारशिला' नामक एक अनुष्ठान को जन्म दिया है । कुछ छोटे छोटे विषयों को लेकर शुरू किया है । ख़ासकर नई पीढ़ी के के लड़के-लड़कियों को थोड़ी सी प्रेरणा देने के लिए, उनके प्रोत्साहन करने के लिए ; अपने इस सुदीर्घ यात्रा के अभिज्ञाताओं को उनलोगों के साथ बाँट लेने के लिए आधारशिला का जन्म दिया है । मैं चाहती हूँ कि हमारे नई पीढ़ी से अच्छे अच्छे लेखक व लेखिकायें बाहर आए, ताकि यह प्रवाह ठीक रहे। असमीया साहित्य और बहुत आगे तक चलती जाये । यह आधारशिला का एक विशेष लक्ष्य रहा है । आधारशिला ने कुछ अन्य कामों को लिया है । देखते है, भविष्य में क्या किया जा सकता है। " [20] रीता चौधुरी असमीया साहित्य व समाज दोनों के लिए चिंतित है और उसे हर हाल में एक अच्छी स्थिति में लेकर जाने का प्रयास कर रही हैं । असम के नारियों को इस आदर्शवान लेखिका से बहुत कुछ सीखना चाहिए ताकि समय आने पर वे भी इस विकास यात्रा में शामिल हो सकें ।

2.2.3. रीता चौधुरी : पुरस्कार और सम्मान

रीता चौधुरी की रचनाओं को पाठक समाज के साथ साथ बौद्धिक-वर्ग ने भी सराहा हैं । उनके उपन्यासों की कथन-शैली अपने आप में ही एक नवीन रूप है, जिसे सभी ने स्वीकारा भी हैं । रीता चौधुरी के उपन्यासों की भावों की गहराई और विचारों की सूक्ष्मता ने उनके गहन चिंतन को दर्शाया हैं । उनके उपन्यासों के पात्रों ने पाठकों को सोचने पर बाध्य कर दिया हैं और साथ ही समाज में इसका गहरा प्रभाव भी परिलक्षित होता है । उनके उपन्यासों का विविध भाषाओं में अनूदित होना इस प्रभाव का ही एक अंश है । उनके हुनर को पहचानते हुए विविध संस्थाओं द्वारा उनको सम्मानित भी किया गया हैं । इसका एक लेखा-जोखा कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता हैं-

- *अबिरत जात्रा* के पाण्डुलिपि को असम साहित्य सभा द्वारा 'असम साहित्य सभा बँटा' प्रदान, [1981]
- *देउलांखुइ* को असम साहित्य सभा द्वारा ' कलागुरु बिष्णुप्रसाद राभा' सम्मान प्रदान, [2006]
- *देउलांखुइ* को साहित्य अकादमी द्वारा 'साहित्य अकादमी' सम्मान प्रदान, [2008]
- उनकी सफल रचनाओं के लिए 'सदौ असम लेखिका समारोह समिति द्वारा 'लेखिका समारोह साहित्य बँटा' प्रदान, [2011]

2.3. मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी : एक तुलनात्मक अवलोकन

हिन्दी व असमीया साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा तथा रीता चौधुरी का नाम आज विशेष रूप से चर्चित है। दोनों लेखिकाओं ने अपने व्यक्तित्व तथा वलिष्ठ लेखन से पाठकों का ध्यान आकर्षित किया हैं । अपने साहस एवं आत्मविश्वास के बल वे आज अपने अपने साहित्यिक क्षेत्र में सिर उठाकर जीने की हिम्मत रखती हैं । दोनों कथाकारों ने जिस तरह से अपने उपन्यासों में नारी संवेदना को उजागर किया हैं, वह वाकई काबिले तारीफ़ है ।

मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के व्यक्तिगत जीवन तथा साहित्यिक जीवन में बहुत सी समानतायें और असमानतायें रही हैं । मैत्रेयी पुष्पा के पिता बचपन में गुजर गए थे, इसलिए उनकी माताजी को नौकरी करनी पड़ी, उन्होंने ख़ुद अपने आप को संभाला, अपनी पढ़ाई पूरी की थी । छोटी सी उम्र में वे अपने को बुरे नजरों से बचाना सीख गई थी । अनेक संघर्षों के बाद भी उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की थी । उधर दूसरी तरफ रीता चौधुरी को बचपन में ही अपने दीदी के मौत का सदमा सहना पड़ा । उस घटना ने उनके कोमल मन पर बड़ा आघात छोड़ा । इसके बाद सबसे बड़ी मुसीबत आयी उनकी पढ़ाई के दौरान; दसवीं की परीक्षा के बाद असम में छेड़े गए एक गणतांत्रिक आंदोलन के दौरान उनकी शिक्षा को चार/पाँच सालों का विराम लेना पड़ा । उन्होंने अपने जीवन के वह अनमोल दिन गँवा दिये, जो कभी लौटकर नहीं आनेवाला था । जिसका हरजाना रीता चौधुरी को भुगतना पड़ा; उन्होंने बड़े संघर्षों के बाद अपनी पूरी की थी । भारतीय कथा-साहित्य के इन दोनों महान रचनाकारों का प्रारम्भिक जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा हैं ।

अब आते है दोनों के साहित्यिक क्षेत्र की तरफ; मैत्रेयी पुष्पा ने जहाँ शहर के बदले गाँव को ज्यादा महत्व प्रदान दिया, वही रीता चौधुरीने शहर-गाँव न देखते हुए एक विशेष समय या परिवेश को अपने कथा का आधार बनाया है । जो भी हो, दोनों ने अपने अपने डायरे में रहकर वास्तव को उजागर करने का प्रयास किया और वें काफ़ी हद तक सफल भी रहीं । दोनों साहित्यकारों की सबसे अनोखी बात यह रही हैं कि उन्होंने अपने साहस के बलबूते पर अपने अपने साहित्य-जगत में अपनी जगह बनाई हैं । बरना आज के जमाने में कितने साहित्यकार आते हैं और चले जाते हैं, वे टिक नहीं पाते । मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी- इन दोनों नामों का विवाद के साथ जैसे संपर्क ही बन गया हैं । दोनों की नायिकाएँ परम्पराओं का विरोध करती हुई निरंतर आगे बढ़ती जाती है । दोनों कथाकारों के इस सफलता के पीछे उनका आत्मविश्वास ही मूल तत्व के रूप में रहा हैं । जिसने हमेशा उन्हें आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान की हैं । अपने व्यक्तिगत जीवन में लाख रुकावतों के बाद भी उन्होंने आखिरकार अपनी मंजिल को छू ही

लिया । दोनों लेखिकाओं ने जिस कदर नारी-मन को समझा और उसका मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है, वह निसंदेह प्रशंसनीय हैं ।

मैत्रेयी पुष्पा और रीता चौधुरी के व्यक्तित्व और साहित्यिक शैली की विशेषताओं के विश्लेषण के उपरांत यह निष्कर्ष सामने आता है कि दोनों ने अत्यंत कठिन परिस्थिति के बीच अपना यह सफ़र तय किया हैं । इस मुकाम तक पहुँचने के लिए उन्हें अनेक मानसिक व शारीरिक कष्टों का सामना पड़ा । और आज जब अपने पेरों पर खड़े होकर वे अपनी मौजूदगी का सरेआम ऐलान कर रही हैं, निरंतर बेझिझक लिख रही है; तो उनकी सफलता को देख अनेक बातें बननी लगी हैं । बहुत आश्चर्य की बात है यह...कि किसी स्त्री की कामियाबी पर हमेशा समाज शक करता है, लोग तरह तरह की बातें बनाते हैं । असल में यह एक ज्वलन की प्रक्रिया है; जिसमें परंपरावादी मानसिकता जलकर स्वाहा हो रही है । आज उसी राख़ से स्त्री अपना इतिहास लिखकर अपनी वजूद को कायम करना का डंका बजा रही हैं । आज उन सबों ने यह प्राण लिया है कि न तो हम मिटेंगे और न ही दूसरों को मिटाने देंगे ।

संदर्भ-सुंची:

1. पुष्पा, मैत्रेयी, *तबदील निगाहें,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृष्ट. सं. 156
2. तिवारी, रामचन्द्र, *हिन्दी का गद्य साहित्य,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1995, पृष्ट सं. 280
3. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 114
4. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 90
5. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं.58
6. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 59
7. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 39
8. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 22-23
9. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 52
10. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 91
11. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 14
12. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 59
13. पुष्पा, मैत्रेयी, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ट. सं. 84
14. तालुकदार, उत्तम, *सृजन,* तेज़पुर विश्वविद्यालय, 2012-13, पृष्ट. सं. 80
15. तालुकदार, उत्तम, *सृजन,* तेज़पुर विश्वविद्यालय, 2012-13, पृष्ट. सं. 78
16. हाजरिका, कमल किशोर, *द्वारम,* मंगलदोईयान, मंगलदोई, ओक्टोबर-दिसंबर, 2013, पृष्ट. सं. 32
17. हाजरिका, कमल किशोर, *द्वारम,* मंगलदोईयान, मंगलदोई, ओक्टोबर-दिसंबर, 2013, पृष्ट. सं. 32
18. तालुकदार, उत्तम, *सृजन,* तेज़पुर विश्वविद्यालय, 2012-13, पृष्ट. सं. 78

19. हाजरिका, कमल किशोर, *द्वारम्*, मंगलदोईयान, मंगलदोई, ओक्टोबर-दिसंबर, 2013, पृष्ट. सं.78-79

20. हाजरिका, कमल किशोर, *द्वारम्*, मंगलदोईयान, मंगलदोई, ओक्टोबर-दिसंबर, 2013, पृष्ट. सं. 34